जनसत्ता 15 सतिंबर, 2014: यूनसिफ की ताजा रपिोर्ट दक्षणि शिया के अन्य देशों के साथ-साथ भारत के लि भी चतिाजनक है। इस रपिोर्ट के मुताबकि दक्षणि शिया में हर साल बीस लाख से ज्यादा बच्चे ऐसी बीमारियों की चपेट में आकर दम तो देते हैं जनिका आसानी से इलाज संभव है। दुनिया के इस क्षेत्र के पैंतीस फीसद बच्चे घोर कुपोषण के शकिार हैं। इनमें भारत की हालत कोई बेहतर नहीं है, बल्कि श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे प ोसी देशों से गई-बीती है। यूनसिफ की रपिोर्ट के अलावा और भी कई अध्ययन इस सलिसिले में आ चुके हैं। इन सब के आंकड़ों में थो ा-बहुत फर्क के बावजूद सामान्य नष्किर्ष यही रहा है कि भारत में कुपोषणग्रस्त बच्चों का अनुपात चालीस से पैंतालीस फीसद के बीच है। ऐसी ही एक रपिोर्ट का लोकार्पण करते हु तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सहि ने कुपोषण को देश के माथे पर कलंककार दयिा था। पर उनकी सरकार के दस साल के दौरान इस कलंक को क्यों नहीं मटिाया जा सका, जबकि उनके कार्यकाल के आखिरी दो साल को छो दें, तो देश ने आठ से नौ फीसद की वकिास दर हासलि की। यह वरिोधाभास इसलि नजर आता है क्योंकि वकिास को सामाजकि मानकों और वंचति वर्गों की बेहतरी की कसौटी पर नहीं कसा जाता। वशि्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययनों और संयुक्त राष्ट्र की मानव वकिास रपिोर्टों ने भारत के बच्चों में कुपोषण की व्यापकता के साथ-साथ बाल मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर का ग्राफ काफी ऊंचा रहने के तथ्य भी बार-बार जाहरि कि हैं। यूनसिफ की रपिोर्ट बताती है कि ल कियों की दशा और भी खराब है।

पाकस्तिान और अफगानस्तिान के बाद, बालगि होने से पहले ल कियों को ब्याह देने के मामले दक्षणि में सबसे ज्यादा भारत में होते हैं। मातृ मृत्यु दर और शशिु मृत्यु दर का एक प्रमुख कारक यह भी है। यह रपिोर्ट ऐसे समय जारी हुई है जब बच्चों के अधकिारों से संबंधति वैश्वकि घोषणापत्र के पच्चीस साल पूरे हो रहे हैं। इस घोषणापत्र पर भारत और दक्षणि शिया के अन्य देशों ने भी हस्ताक्षर कि थे। इसका यह असर जरूर हुआ कि बच्चों की सेहत, शक्षिा, सुरक्षा से संबंधति न कानून बने, मंत्रालय या वभिाग गठति हु , संस्था और आयोग बने। घोषणापत्र से पहले की तुलना में कुछ सुधार भी दर्ज हुआ है। पर इसके बरक्स बहुत सारी बातें वचिलति करने वाली हैं। मसलन, देश में हर साल लाखों बच्चे गुम हो जाते हैं। लाखों बच्चे अब भी स्कूलों से बाहर हैं। श्रम-शोषण के लि ववशि बच्चों की तादाद इससे भी अधकि है। वे स्कूल में पटिाई से लेकर घरेलू हसिा के शकिार होते रहते हैं। बच्चों के खलिाफ यौन-अपराध की घटना काफी बढ़ी हैं। जब बंगलुरु के एक आभजिात्य स्कूल में एक बच्ची के साथ बलात्कार की घटना सामने आई, तो समाज में सहिरन पैदा हुई। पर ऐसे कसिी वाक्ये पर थो ा समय के वरिोध-प्रदर्शन के बाद बच्चों की हालत पर खामोशी छा जाती है। परविार के स्तर पर देखें तो संतान का मोह काफी प्रबल दखिाई देगा, मगर दूसरी ओर, बच्चों के प्रति सामाजकि संवेदनशीलता बहुत क्षीण है। कमजोर तबकों के बच्चों के प्रति तो बाकी समाज का रवैया अमूमन असहष्णिुता का ही रहता है। क्या ये स्वस्थ समाज के लक्षण है?

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के लि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta